लघु नाटिका

शान्तिदाता कौन?

पात्र: ब्रह्माकुमारी, अशान्तमल (शान्ति का भिखारी), सेठ जी, राजनेता, वैज्ञानिक, महात्मा

(अशान्तमल कटोरा लेकर एक दुकान पर जाता है, दुकान पर बोर्ड लगा हुआ है 'यहाँ सब कुछ मिलता है')

अशान्तमल – भाई, आपकी दुकान पर लिखा हुआ है 'यहाँ सब कुछ मिलता है' इसलिए मैं आया। जरा, थोड़ी सी शान्ति दे दो।

दुकानदार – भाई, यहाँ शान्ति नहीं मिलती।

अशान्तमल – तो भैया, किस दुकान पर मिलेगी?

दुकानदार – किसी भी दुकान पर यह नहीं मिलेगी। यह कोई बिकती थोड़े ही है। बिकती होती तो हम ना बेचते।

अशान्तमल – ठीक है भाई।

(फिर अशान्तमल कटोरा लेकर धनी व्यक्ति सेठ जी के पास जाता है)

अशान्तमल – जयराम जी की सेठ जी।

सेठ जी – जयराम जी की भाई! कहो, आज कैसे आना हुआ?

अशान्तमल – सेठजी, मैं शान्ति की खोज में हूँ। मैंने सुना है कि आपके पास धन-संपत्ति, कार, बंगला व अन्य सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं है। मैं आपके पास इसलिए आया हूँ कि आपके पास तो शान्ति की कोई कमी नहीं होगी। कृपया करके मुझे भी थोड़ी शान्ति दे दीजिये।

सेठ जी – भाई अशान्तमल, यह तो तूने ठीक कहा है कि पैसे के बल पर मैंने सब सुखों के साधन जुटा लिये हैं। पैसे से क्या नहीं खरीदा जा सकता? महीने में चार बार तो हांगकांग घूमकर आता हूँ पर भाई, वास्तव में तो जो समस्या तुम्हारी है, वही मेरी भी है। ज्यों-ज्यों मेरे पास भौतिक साधन बढ़ते गये हैं, शान्ति मेरे जीवन से दूर होती चली गई है। अब न घर में शांति है, न मन में। मैं तो स्वयं ही शान्ति की खोज में हूँ।

अशान्तमल – अच्छा, मैं तो इसी आशा से आपके पास आया था कि आपके पास तो शान्ति मिलेगी ही। परंतु अब तो मुझे कहीं ओर ही तलाश करनी पड़ेगी शान्ति की।

(अशान्तमल प्रस्थान करता है)

सेठ जी – *(पीछे से आवाज देकर)* सुनो भाई, यदि तुम्हें शान्ति मिल जाये तो थोड़ी मुझे भी देकर जाना, भूल न जाना।

अशान्तमल – जरूर! जरूर! सेठ जी जरूर।

(अशान्तमल अब शान्ति की प्राप्ति के लिए एक राजनेता के पास जाता है)

अशान्तमल – *(राजनेता से)* नेता जी, राम-राम

राजनेता – राम-राम भाई, कहो, सब कुशल मंगल तो है?

अशानतमल – नेता जी, और तो सब ठीक-ठाक है परंतु मेरे मन में शान्ति नहीं है। मैंने आपके चुनावी घोषणा-पत्र में पढ़ा है कि यदि आप जीत गये तो जनता की सब समस्यायें, अन्याय, भ्रष्टाचार सब मिटा देंगे। उनकी जरूरतों को पूरा करेंगे। मेरी तो एक ही जरूरत है कि मुझे शान्ति चाहिए। बस शान्ति।

नेता जी – *(धीरे से बड़बड़ाते हुए)* अरे, ये कमबख्त ऐसी चीज लेने आया है जो स्वयं मेरे पास ही नहीं है। मैं खुद ही अशान्त हूँ। पिछले तीन दिन से तो सोया भी नहीं हूँ। और अब तो नींद की गोलियाँ भी बेअसर हो गई हैं।

(तेज स्वर में) हाँ भाई अशान्तमल, मैं कहीं विचारों में खो गया था। भाई, देखो, यह विषय ऐसा है शान्ति का जिसकी मेरे पास भी बहुत शार्टेज है इसिलए हम जनता को शान्ति देने का वायदा नहीं करते। यह काम हमारा नहीं है भैया। हाँ यदि तुम्हें कोई सिफारिश की जरूरत हो तो मेरे दरवाजे सदा खुले रहेंगे कभी भी आना। अभी तो मुझे एक चुनावी सभा को संबोधित करने जाना है। क्षमा करना। हाँ यदि तुम्हें कहीं शान्ति मिल जाये तो उसका पता ठिकाना मुझे जरूर बताके जाना।

अशान्तमल – धनी लोगों के पास शान्ति नहीं, नेताओं के पास शान्ति नहीं, आखिर मुझे शान्ति कहीं मिलेगी भी!

अशान्तमल – वैज्ञानिक जी, नमस्ते।

वैज्ञानिक – गुडमॉर्निंग भाई, हाउ आर यू।

अशान्तमल – भाई अंग्रेजी तो मुझे आती नहीं है। मैं तो शान्ति की खोज में हूँ। आपने देश में अमन-चैन बना रहे, इसके लिए बड़े एटम बम, हाइड्रोजन बम बनाये हैं। हर व्यक्ति सुख-शांति से जीवन बिता सके, इसके लिए हर सुख-सुविधा के साधन बनाये हैं। लेकिन ये सब साधन, सुविधायें मुझे शान्ति नहीं दे पा रही हैं, क्या आपने कोई ऐसा आविष्कार किया है जो मेरे मन को शान्ति मिल जाये?

वैज्ञानिक – देखो भाई, हमारा लक्ष्य तो यही था कि हम साइंस के द्वारा नये-नये आविष्कार करके जनता का जीवन सुखी, शांत और समृद्धि वाला बनाने का प्रयास करते हैं। पर अफसोस, ये साधन व्यक्ति को सच्चा सुख और सच्ची मन की शान्ति नहीं दे पाये। आज सब सुविधायें होने के बावजूद मनुष्य का मन अशान्त है, दुखी है, तन बीमार है। हमारे इस प्रयास में आखिर कहाँ कमी रह गई? हमने देश की सुरक्षा के लिए एटम बम, हाइड्रोजन बम बनाये पर अफसोस हमारी इस सबसे बड़ी उपलब्धि ने तो सारी मानवता को ही भयभीत कर बिा है। हमने चाहा तो था सबको शान्ति के सिंहासन पर बिठाना लेकिन सबको बारूद के ढेर पर बिठा दिया है। अपने आविष्कारों का यह विनाशकारी परिणाम देख-देख कर मेरा सिर अशान्ति की पीड़ा से फटा जा रहा है। मैं सोचता हूँ कि हमारे एक छोटे से प्रयास ने ही जापान के हिरोशिमा व नागासाकी शहरों को ध्वस्त कर दिया था तो आज तो हमारे पास दुनिया को सैकड़ों बार ध्वस्त करने जितनी सामग्री बनी पड़ी है। जब ये सामग्री प्रयोग होगी तो दुनिया का क्या हाल होगा। ऐसे में शान्ति का प्रश्न तो सारी दुनिया के सामने खड़ा है। कैसे मिलेगी शान्ति, क्या होगा दुनिया का *(हाँफता है)* पानी...पानी...।

अशान्तमल – ओहो, बाप रे। यह तो मेरे से भी अधिक अशान्त है। यदि कहीं शान्ति मिली तो सबसे पहले इसी को देकर जाऊँगा। यह तो मेरे से भी बड़ा शान्ति का भिखारी है।

(अब अशान्तमल बड़ी आशा के साथ एक महात्मा के पास जाता है)

(महात्मा हरिओम का मंत्र जप रहा है)

अशान्तमल *(महात्मा से)* – महात्मा जी, मन की शान्ति को अनेक जगह तलाशता हुआ मैं बड़ी आशा से आपके पास आया हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी इच्छा आपके पास ही पूर्ण हो सकती है। आपने तो घर-बार का त्याग किया है, प्रभु की शरण में आये हैं। आपका तो भगवान से डायरेक्ट कनेक्शन होगा। मेरी शान्ति की प्यास आप ही बुझा सकते हैं। महात्मन्, मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये।

महात्मा जी – सुखी रहो, बच्चे सुखी रहो। देखो बच्चे शान्ति केवल एक तुम्हारा ही प्रश्न नहीं है बल्कि सारी दुनिया के सामने एक बहुत बड़ा सवाल है। शानित थोड़े समय के लिए नहीं, पूरे जीवन के लिए चाहिए बल्कि यहाँ तक कि मरने के बाद भी। हम अपनी साधना के फलस्वरूप थोड़े बहुत लोगों को थोड़े समय के लिए तो शान्ति का अनुभव करा सकते हैं लेकिन जहाँ सारी दुनिया को सदाकाल के लिए शान्ति मिलने की बात आती है तो वह तो हम भी नहीं कर सकते क्योंकि हम फिर भी जन्म-मृत्यु, कर्म और फल के अधीन हैं। यह कार्य तो परमात्मा ही कर सकता है।

अशान्तमल – फिर महात्मा जी, मुझे परमात्मा का पता बताइये, वह कौन है? कहाँ रहता है?

(गीत बजता है – अ खुदा ये बता तेरा क्या नाम है, तू है रहता कहाँ...)

अशान्तमल – महात्मा जी, मुझे बताइये कि वह परमात्मा मुझे कहाँ मिल सकता है?

महात्मा जी – मैंने सुना है कि परमात्मा का सत्य परिचय ब्रह्माकुमारियों के पास है। तुम वहाँ चले जाओ, तुम्हारी सब मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी।

(अशाान्तमल खुश होता हुआ ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाता है)

अशान्तमल (आश्रम में पहुँच कर अपने आप से) – आहा! यहाँ तो बड़ी शान्ति का अनुभव हो रहा है। यहाँ तो दीवारों से भी शान्ति के वायब्रेशन आ रहे हैं।

(ब्रह्माकुमारी का प्रवेश)

अशान्तमल – नमस्ते बहनजी।

ब्रह्माकुमारी – ओमशान्ति भाई! कहो भाई! कैसे आना हुआ, भगवान के घर में आपका स्वागत है।

अशान्तमल – बहनजी, मैं शान्ति की खोज में हूँ। शान्ति की प्राप्ति के लिए अनेक जगह भटकता फिर रहा हूँ। मुझे शान्तिदाता कोई नहीं मिला, जहाँ भी गया निराशा ही हाथ लगी। मैं आपके पास इसी विश्वास से आया हूँ कि यहाँ पर तो मेरी समस्या का समाधान अवश्य ही मिलेगा। क्या आप मुझे उस शान्ति के दाता का परिचय देंगी?

ब्रह्माकुमारी – हाँ भाई, अब आप ठीक स्थान पर पहुँच गये हो। वास्तव में सच्चा शान्ति दाता तो एक परमपिता परमात्मा शिव ही हैं जो रूप में बिन्दु और गुणों में सिन्धु के समान हैं। वहीं सच्ची शांति दे सकते हैं क्योंकि वे जन्म-मरण, कर्म-कर्मफल के अधीन नहीं हैं। आज इंसान ने सुख-सुविधाओं के साधन जुटा लिये हैं। इनमें इंसान शांति को खोज रहा है। लेकिन शान्ति कोई भौतिक चीज नहीं है जिसे भौतिक साधनों में ढूँढ़ा जायें। शान्ति तो हम सभी आत्माओं का स्वधर्म है। जब हम अपने सच्चे स्वरूप को और अपने पिता परमात्मा को जान लेते हैं तो फिर हमारी बुद्धि का योग शांति के सागर परमात्मा से जुट जाता है और आत्मा परमशांति का अनुभव करती है। यही राजयोग है जो संस्था द्वारा सिखाया जाता है। आप भी इस राजयोग को सीखकर सच्ची शांति का अनुभव कर सकते हैं। यह राजयोग हमारे हर सेवाकेन्द्र पर बिल्कुल नि:शुल्क सिखाया जाता है।

अशान्तमल – अरे, क्या बात है, इतनी अमूल्य प्राप्ति और वो भी बिना मूल्य।

मैं तो आज से ही शुरू कर देता हूँ।

ब्रह्माकुमारी – वाह, इससे बड़ी तो कोई बात ही नहीं है।

(गीत बजता है – आओ शिव का ध्यान धरे...)